International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 12, December 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

सिक्ख–दर्शन एवं कर्मकाण्ड

डॉ. रंजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा– विभाग
खुन खुन जी गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ

''आत्मा प्रारम्भ से ही एक जन्म से दूसरे जन्म में आती रही है और उसके अच्छ–बुरे कर्म उसके साथ ही जुड़े रहे हैं, यह सब उसके द्वारा किये गए कार्यो का ही फल है, जिसे 'कर्म ''कहा गया है''[1]

इस प्रकार आत्मा का इस संसार में आना–जाना अथवा संसार से मुक्ति मनुष्य द्वारा किये गये कर्मो पर ही निर्भर करती है।

सिक्ख दर्शन के अनुसार शुद्ध कर्म करने एवम् ईश्वर का नाम–सिमरन करना ही श्रेष्ठ धर्म है, जिससे संसार में आवागमन (जन्म–मरण) से मुक्ति मिल सकती है– सरब धरम महि श्रेष्ठ धरमु।। हरि को नामु जपि, निरमल करमु।।[2]

परन्तु कुछ अन्य धर्मो में कुछ विशेष कर्म करने की विधियॉ बताई गई है, जिनको करने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है उन विशेष कर्मो को कर्मकाण्ड कहते है गुरूवाजी के अनुसार केवल प्रभु कीर्ति अथवा नाम सिमरन ही विकारो से बचने तथा ईश्वर में लीन होने का धार्मिक कर्म है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

–करम धरम पाखंड जो दीसहि, तिन जमु जागाती लूटै।।

निवबाण कीरतनु गावहु करते का, निमख सिमरत जितु छूटै।।[3]

–पिआरे इन बिधि मिलणु न जाइ मैं कीए करम अनेका।।

हारि परिओ सुआमी क दुआरै दीजै बुद्धि बिबका।।[4]

जिसे गुरूवाणों में पाखंड कहा जाता है।

कुछ कर्मकाण्डों का वर्णन करते हुए गुरू जी इस प्रकार उनका विरोध करते है–

खटु सासत बिचरत मुखि गिआना।। पूजा तिलकु तीरथ इसनाना।।

निवली करम आसन चउरासीह।। इन महि संाति न आवै जीउ।।

अनिक बरख कीए जप तापा।। गवनु कीआ धरती भरमाता।।

इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि–बहुड़ि उठि धावै जीउ।।[5]

गुरूवाणी ने निम्नलिखित कर्मकाण्डों का विरोध किया गया है–

1. **<u>तत्त्व पूजा</u>**–

प्रारम्भ में मनुष्य ने ईश्वर को भूलकर पॉच तत्वों–पवन, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि की पूजा की ईश्वर की कृति की ही कर्ता समझ लिया। गुरूओं ने इस कृत्रिम पूजा का खण्डन किया।उनका कहना था कि 'कादर' (ईश्वर) कुदरत का स्वामी है, कुदरत उससे श्रेष्ठ नहीं सारी रचना उस ईश्वर के भय में ह इसलिए प्राकृतिक रचना से डरने कीआवश्यकता नहीं है–

भै विचि, पवणु वहै सदवाउ। भै विचि, चलहि लख दरीआउ

भै विचि, अगनि कढै वेगारि।। भै विचि, धरती दबी भारि।।

भै विचि, इंदु फिरै सिर भारि।। भै विचि, राजा धरम दुआरू।।

भै विचि, सूरजु भै विधि चंदु।। कोह करोड़ी चलत न अंतु।।[6]

2. <u>देव पूजा</u>–

गुरू ग्रन्थ साहिब में एक अकाल पुरख की पूजा एवं उसका नाम सिमरन करने का उपदेश दिया गया है। इसलिए सिक्ख दर्शन में देवी–देवताओं की पूजा करने का खण्डन किया है, क्योंकि यहाँ ईश्वर की शक्तियों को केन्द्रीय माना गया है। बाँटा हुआ नहीं माना गया है। गुरू जी के अनुसार–

देवी देवा पूजीअै भाई, किआ मागउ किआ देहि।।

पाहणु नीरि पखालीअै भाई, जल महि बूडहि तेहि।।[7]

हउ तउ एकु रमईआ लैहउ।। आन देव बदलावनि दैहउ।।[8]

3. <u>अवतार पूजा</u>–

जैसा कि भगवदगीता में कहा गया है कि जब संसार में धर्म की ग्लानि होती है, पाप फैल जाता है तब संसार के कल्याण के लिए भगवान अवतार लेते है परन्तु सिक्ख दर्शन में यह माना जाता है कि सर्वशक्तिमान सत्य स्वरूप ईश्वर अजूनी है वह जन्म नहीं लेता।

अवतार न जानहि अंतु। परमेसरू, पारब्रहम बेअंतु।।[9]

गुरू जी ने तो यहाँ तक कहा है–

सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरू जोनी।।[10]

4. **मूर्ति पूजा**–

किसी देवी–देवता आदि की पत्थर, लकड़ी या अन्य किसी भी धातु की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने को ''मूर्ति–पूजा'' कहा जाता है। गुरूवाणी इसका विरोध करती है, इसे व्यर्थ कार्य माना है।

जो पाथर को कहते देव।। ताकी बिरथा होवै सेव।।

जो पाथर की पांई पाइ।। तिस की घाल अजांई जाइ।।[11]

5. कब्रो की पूजा–

मृत व्यक्ति के अन्तिम–संस्कार स्थान के ऊपर बनाई गई इमारत आदि की पूजा का सिक्ख धर्म में खण्डन किया गया है। यह कर्म सिक्ख दर्शन के अनुसार ईश्वर से मनुष्य को दूर ले जाता है–

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरू न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई।।[12]

सिक्ख दर्शन में प्रभु के अतिरिक्त अन्य किसीकी पूजा करना वर्जित है।

6. तीर्थ–स्नान–

कुछ धर्मो के अनुसार विशेष धार्मिक स्थानों अथवा कुछ विशेष नदियों में स्नान करने मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है–ऐसा विश्वास सिक्ख दर्शन में नही है–

जल कै मजनि जे गति होवै, नित–नित मेडुक नावहि।।

जैसे मेडुक तैसे ओइ नर, फिरि–फिरि जोनी आवाहि।।[13]

सिक्ख दर्शन में तीर्थ–स्नान आदि का खण्डन नहीं किया है परन्तु मात्र तीर्थयात्रा और वहाँ स्नान आदि से ही मुक्ति नहीं मिलती। गुरू नानक देव जी

ने लिखा है कि मेरे लिए तो परमात्मा का नाम और गुरू के शब्द को विचार–मण्डल में टिकाना ही तोर्थ है, इसी से कल्याण होता है–

तीरथि नावण जाउ तीरथु नाम है।। तीरथु सबद बीचारू अंतरित गिआनु है।।[14]

7. शगुन–अपशगुन आदि–

किसी कार्य को आरम्भ करते समय सगुन अपसगुन तथा मुहूर्त आदि विचारों का सिक्ख दर्शन में विरोध किया गया है।

गुरू जी कहते है–सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै।।[15]

अर्थात जिसके चित्त में परमात्मा नहीं बसता उस मनुष्य को सगुन अपसगुन का वहम होता है।

8. सूतक पातक–

शास्त्रानुसार जन्म के समय की अशुद्धि को ''सूतक'' तथा मृत्यु के समय की अशुद्धि को ''पातक'' कहा गया है गुरू ग्रन्थ साहिब में सूतक तथा पातक दोनों को भ्रम रूप जानकर इनका खण्डन किया गया है–

सभो सूतक भरमु है, दूजै लगै जाइ।।

जंमणु मरणा हुकमु है, भाणै आवै जाइ।।[16]

अर्थात माया में फंसे लोगों को ही सूतक पातक आ लगता है, जो निरा भ्रम ही है क्योंकि जन्म–मरण तो ईश्वर का हुकम है उसकी रजा है।

9. हवन–यज्ञादि–

शास्त्रानुसार अग्नि को देवताओं की रसना (जीभ) मानकर हवन करने से लोक एवं परलोक के सुख प्राप्त हो जाते है परन्तु सिक्ख दर्शन में इन

कर्मो को निरर्थक माना गया है बल्कि ये कर्म अंहकार उत्पन्न करते है जिससे मनुष्य जन्म मरण के चक्र में फंस जाता है–

होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार।।

नरकु सुरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि–बहुरि अवतार।।[17]

10. <u>विशेष वेशभूषा पहिरावा–(पोशाक)–</u>

भिन्न–भिन्न धर्मो के द्वारा पुजारियों तथा श्रद्धालुओं के लिए विशेष धार्मिक वस्त्र एवं धार्मिक वस्त्र एवं धार्मिक चिन्ह निश्चित किए गए है। सिक्ख दर्शन के अनुसार ये वस्त्र एवं चिन्ह आत्मिक विकास में बाधक बनकर एवं आडम्बर बनकर रह जाते है इसलिए गुरूवाणी में विशेष वेशभूषा के स्थान पर नैतिक गुणों को धारण करने की प्रेरणा दी है–

बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनुआ दहदिसि धावै।।

हउमै बिआपिआ सबहु न चीन्है फिरि–फिरि जूनी आवै।।[18]

11. <u>व्रत रखना</u>–

सनातन धर्म एवं इस्लाम धर्म की व्रतो (इस्लाम में रोजे) रखने का विधान है जिस दिन व्रत अथवा रोजे रखे जाते है उस दिन अन्न नहीं खाया जाता है।

सिक्ख दर्शन में इसका खण्डन किया गया है गुरू नानक देव जी के अनुसार जो लोग अन्न नहीं खाते, उससे शरीर को ही कष्ट मिलता है कोई आत्मिक लाभ प्राप्त नहों होता। गुरू से मिले ज्ञान के बिना तृप्ति नहीं हो सकती है।

अंनु न खाहि दही दुखु दीजै। बिनु गुर गिआन त्रिपति नहीं थीजै।।[19]

अंनै बिना ना होइ सुकालु।। तजिऔ अंनि न मिलै गुपालु।[20]

12. तपस्या करना–

तप का शाब्दिक अर्थ है– दुखी होना, पछताना। इस प्रकार तपस्या का अभिप्राय है– पश्चात्ताप करना, स्वयं को कष्ट देना, वरागी बनने के लिए अनेक कष्टों को सहना। कुछ लोग अपने मन की पवित्रता के लिए अपने शरीर को कष्ट देते है, जिसे कुछ सम्प्रदाय तपस्या कहते है। सिक्ख दर्शन इन सभी क्रियाओं को पाखण्ड बताकर इसका खण्डन करता है क्योंकि इस तरह की क्रियाए करके मनुष्य अंहकार करने लगता है जो कि धार्मिक मार्ग में बड़ी रूकावट बन जाता है।

कोटि करम करै हउ धारै। श्रमु पावै सगले बिरथारे।।

अनिक तपस्या करें अंहकार।। नरक सुरग फिरि–फिरि अवतार।।[21]

जो मनुष्य जप करता है, सारे तप साधता है, हरेक किस्म की समझदारी भी करता है पर यदि वह परमात्मा का दास बनने की युक्ति नहीं समझता तो उसके जप–तप आदि का कोई उद्यम ईश्वर की हजूरी में परवान नहीं चढ़ता–

सभि जप सभि तप सभ चतुराइ।। ऊझड़ि भरमै राहि न पाई।।[22]

गुरू की सेवा ही सारी तपस्याओं का सार है–

गुरू सेवा तपां सिरि तपु सारू।। हरि जीउ मनि वसै सम दूख विसारणहर।।[23]

13. श्राद्ध आदि काय–

सिक्ख दर्शन में श्राद्ध आदि कार्यो की मनाही है। गुरू ग्रन्थ साहिब में लिखा है कि लोग जीवित माता–पिता का तो आदर–मान नहीं करते, पर मर गए पित्रों के निमित्त भोजन खिलाते है, इसके द्वारा घर में कुशल मंगल कैसे हो सकता है–

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही।।
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही।।
मो कउ कुसलु बतावहु कोइ।।
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई।। रहाउ।।[24]

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. Encyclopedia of Religion and Ethics, James Hasting, Page 673
   इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स, जेम्स हास्टिंग, पृ0 673
2. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, असटपदी 3, 8 पृ0 266
3. वही, सूही महला 5,1 पृ0 747
4. वही, सोरठि महला 5 घरू 5, असटपदीआ, पृ0 641
5. वही, माझ महला 5,2,3 पृ0 98
6. वही, सलोक महला 1 पृ0 464
7. वही, सोरठि महला पहिला, दुतुकी 6, पृ0 637
8. वही, गोंड, पृ0 874
9. वही, रामकली महला 5, 1 पृ0 894
10. वही, भैरउ महला 5, घरू 1,3 पृ0 1136
11. वही, महला 5, 1 पृ0 1160
12. वही, आसा, 2, पृ0 484
13. वही, धनासरी महला 1, छंत 1, पृ0 687
14. वही, सोरठि महला 1, घरू 1, असटपदीआ, चउतुकी, 1, पृ0 634
15 वही, आसा महला 5, 2, पृ0 401
16. वही, महला 1, 3, पृ0 472
17. वही, रागु गौड़ी मालवा, महला 5, 2, पृ0 214
18. वही, सूही महला 4, 3, पृ0 732
19. वही, रामकली महला 1, 6, पृ0 905
20. वही, गोंड, 4, पृ0 837
21. वही गउडो सुखमनी महला 5, असटपदो 12, 3, पृ0 278
22. वही, आसा महला 1, 1, पृ0 412
23. वही, आसा महला 3, 4, पृ0 423
24. वही, रागु गउडो बैरागणि कबीर जी, 1, पृ0 332